• बाल कविताएं...

अच्छी बुद्धि

छि: चिड़िया, छि: गैया कैसी
रोज-रोज नंगी ही रहतीं।
सोचे मुनिया बेठी-बेठी
मम्मी इनकी कुछ न कहतीं?
जहां तहां गोबर कर देती
लाज गाय को कब है आती
चिड़िया भी ऐसी ही होती
बाथरूम में कभी न जाती।
आखिर पापा से ही पूछा
पापा ने यह बात बताई
बेटी इनको हम जैसी तो
अच्छी बुद्धि मिल ना पाई।

■ दिविक रमेश

अपनी कार

चलो चलाएं अपनी कार।
इसमें घूमेंगे संसार।
अपनी कार अनोखी है।
यह रुपए दो सौ की है।
इसमें बैठें चार सवार।
चलती तो चलती जाती।
ब्रेक लगे तो रुक जाती।
पर्वत नदिया करती पार।
दादा दादी आ जाएं।
अम्मा बापू भी आएं।
उन्हें घुमा लाऊं बाजार।

■ प्रभुदयाल श्रीवास्तव

• चुटकुला...

डॉक्टर मरीज से– अगर तुम मेरी दवा से ठीक हो गए तो मुझे क्या इनाम दोगे?
मरीज– साहब मैं तो बहुत गरीब आदमी हूं कब्र खोदता हूं... आपकी फ्री में खोद दूंगा।

पत्नी– तुम मुझे दो ऐसी बातें बोलो, जिनमें से एक को सुनकर मैं खुश हो जाऊं और दूसरी को सुनकर नाराज हो जाऊं।
पति– तुम मेरी जिंदगी हो और दूसरी बात लानत है ऐसी जिंदगी पर।
फिर क्या हुई पती की कुटाई।

• जानकारी...

हैलोवीन

हैलोवीन एक ऐसा त्योहार है, जिसमें इंसान, भूतों की तरह बन कर रात में सड़कों पर जश्न मनाने निकलते हैं। पहले ये त्योहार सिर्फ पश्चिमी देशों तक ही सीमित था। लेकिन अब भारत के मेट्रो सिटीज में भी इस त्योहार का क्रेज देखने को मिलने लगा है। खासतौर से स्कूली बच्चों में। चलिए आज जानते हैं कि आखिर ये त्योहार क्यों मनाया जाता है और हैलोवीन के दिन लोग भूत ही क्यों बनते हैं।

हैलोवीन हर साल 31 अक्टूबर को मनाया जाता है। इसके इतिहास की बात करें तो ये पश्चिमी देशों की प्राचीन परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा है। आपको बता दें, हैलोवीन का मूल नाम सैमहेन है, जो प्राचीन सेल्टिक जनजातियों के एक उत्सव से आया है। शुरुआती दौर में इस त्योहार को दो वजहों से मनाया जाता था। पहला फसल की कटाई का खत्म होना और दूसरा सर्दियों का आना।

अब आते हैं अपने असली सवाल पर कि आखिर हैलोवीन के त्योहार में लोग भूतों की तरह क्यों दिखना पसंद करते हैं। दरअसल, सैल्टिक लोग मानते थे कि इस त्योहार की रात आत्माएं धरती पर लौटती हैं और अपने फसल में अपने हिस्से की चाह रखती हैं। यही वजह है कि लोग इस दिन अपने घरों के बाहर कद्दू भी रखते हैं। इसके अलावा लोग इस अवसर पर आग जलाते थे और डरावने मुखौटे पहनते थे ताकि वे भूत-प्रेतों से बच सकें।

ये बात 20वीं सदी के आसपास की है। इस सदी में हैलोवीन का क्रेज बढ़ने लगा था। खासतौर से अमेरिका जैसे देशों में इसे मनाने वालों की संख्या बढ़ने लगी। आपको बता दें अमेरिका में यह त्योहार आयरिश और स्कॉटिश आप्रवासियों द्वारा लाया गया था। लेकिन, धीरे-धीरे एक सामूहिक उत्सव में बदल गया। इस दिन को लोग एन्जॉय करने लगे। इस दिन जहां बड़े लोग भूत, प्रेत और अन्य डरावने किरदारों के रूप में सजते थे। वहीं बच्चे हैलोवीन की ट्रिक-या-ट्रीटिंग परंपरा के तहत भूतों की ड्रेस में आस पड़ोस के घरों में जा कर मिठाईयां मांगते थे।

भारत में अभी ट्रिक-या-ट्रीटिंग परंपरा तो नहीं शुरू हुई है। लेकिन यहां मेट्रो सिटीज के स्कूलों और कॉलेजों में हैलोवीन त्योहार मनाए जाने लगे हैं। खासतौर से उन स्कूलों या कॉलेजों में ईसाई ट्रस्ट द्वारा चलाए जाते हैं। दिल्ली, मुंबई, नोएडा और बेंगलुरु जैसे शहरों में आपको 31 अक्टूबर को ऐसे कई लोग मिल जाएंगे जो भूतों के किरदार में घूम रहे होंगे।

• तेनालीराम

हीरों का सच

एक बार राजा कृष्णदेवराय दरबार में बैठे मंत्रियों के साथ विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी एक व्यक्ति उनके सामने आकर कहने लगा, 'महाराज मेरे साथ न्याय करें। मेरे मालिक ने मुझे धोखा दिया है। इतना सुनते ही महाराज ने उससे पूछा, तुम कौन हो? और तुम्हारे साथ क्या हुआ है।'

'अन्नदाता मेरा नाम नामदेव है। कल मैं अपने मालिक के साथ किसी काम से एक गाँव में जा रहा था। गर्मी की वजह से चलते-चलते हम थक गए और पास में स्थित एक मंदिर की छाया में बैठ गए। तभी मेरी नजर एक लाल रंग की थैली पर पड़ी जो की मंदिर के एक कोने में पड़ी हुई थी। मालिक की आज्ञा लेकर मैंने वो थैली उठा ली उसे खोलने पर पता चला कि उसके अंदर बेर के आकार के दो हीरे चमक रहे थे। हीरे मंदिर में पाए गए थे इसलिए उन पर राज्य का अधिकार था। परन्तु मेरे मालिक ने मुझसे ये बात किसी को भी बताने से मना कर दिया और कहा कि हम दोनों इसमें से एक-एक हीरा रख लेंगे। मैं अपने मालिक की गुलामी से परेशान था इसलिए मैं अपना काम करना चाहता था जिसके कारण मेरे मन में लालच आ गया। हवेली आते ही मालिक ने हीरे देने से साफ इनकार कर दिया। यही कारण है कि मुझे इन्साफ चाहिए।

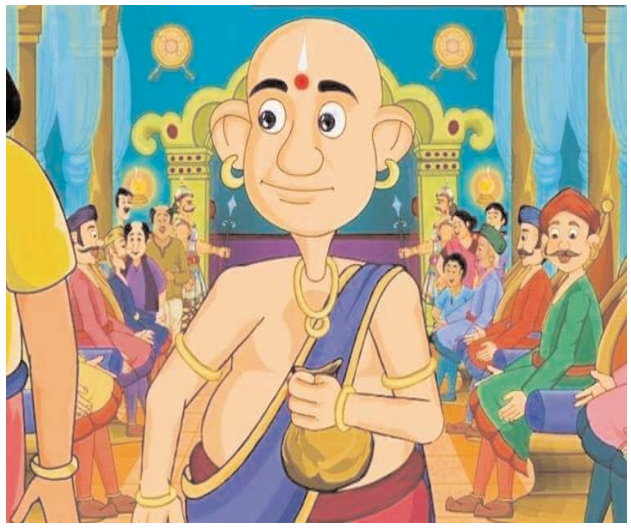

महाराज ने तुरंत कोतवाल को भेजकर नामदेव के मालिक को महल में पेश होने का आदेश दिया। नामदेव के मालिक को जल्द ही राजा के सामने लाया गया। राजा ने उससे हीरों के बारे में पूछा तो वह बोला, 'महाराज ये बात सच है कि मंदिर में हीरे मिले थे लेकिन मैंने वो हीरे नामदेव को देकर उन्हें राजकोष में जमा करने को कहा था। जब वह वापस लौटा तो मैंने उससे राजकोष की रशीद मांगी तो वह आनाकानी करने लगा। मैंने जब इसे धमकाया तो ये आपके पास आकर मनगढ़त कहानी सुनाने लगा।

'अच्छा, तो ये बात है।' महाराज ने कुछ सोचते हुए कहा - 'क्या तुम्हारे पास इस बात का कोई सबूत है कि तुम सच बोल रहे हो?'

'अन्नदाता अगर आपको मेरी बात पर यकीं नहीं तो आप मेरे दूसरे तीनों नौकरों से पूछ सकते हो। वो उस वक्त वहीं थे।'

उसके बाद तीनों नौकरों को राजा के सामने लाया गया। तीनों ने नामदेव के खिलाफ गवाही दी। महारज तीनों नौकरों और मालिक को वही बिठा कर अपने विश्राम कक्ष में चले गए और सेनापति, तेनालीराम, महामंत्री को भी इस विषय में बात करने के लिया वहाँ बुलवा लिया। उनके पहुँचने पर महाराज ने महामंत्री से पूछा, 'आपको क्या लगता है? क्या नामदेव झूठ बोल रहा है?' -जारी

'अन्नदाता मेरा नाम नामदेव है। कल मैं अपने मालिक के साथ किसी काम से एक गाँव में जा रहा था। गर्मी की वजह से चलते-चलते हम थक गए और पास में स्थित एक मंदिर की छाया में बैठ गए।

तभी मेरी नजर एक लाल रंग की थैली पर पड़ी जो की मंदिर के एक कोने में पड़ी हुई थी। मालिक की आज्ञा लेकर मैंने वो थैली उठा ली उसे खोलने पर पता चला कि उसके अंदर बेर के आकार के दो हीरे चमक रहे थे...

• रोचक...

दीमक

दीमक एक सामाजिक कीट है, जो आमतौर पर कोलोनियों में पाया जाता है। इनकी कोलोनियों में हजारों से लेकर लाखों तक सदस्य हो सकते हैं। दीमकें अलग-अलग तरह के होते हैं, जिनमें सूखे लकड़ी की दीमक, भूमिगत दीमक और नम लकड़ी की दीमक शामिल हैं। दीमक का जीवन चक्र चार मुख्य चरणों में होता है, पहला अंडा, दूसरा लार्वा, तीसरा निंफ और चौथा वयस्क। अंडे से निकलने के बाद, लार्वा विकसित होते हैं और धीरे-धीरे निंफ बन जाते हैं। निंफ, वयस्क दीमक के समान होते हैं, लेकिन उनके पंख नहीं होते। वयस्क दीमक, खासकर रानी और राजा, कोलोनियों के प्रजनन के लिए जिम्मेदार होते हैं। दीमक के आहार की बात करें तो ये मुख्य रूप से लकड़ी, पत्ते और अन्य कार्बनिक पदार्थों को खाते हैं। उनके शरीर में विशेष बैक्टीरिया और प्रोटोजोआ होते हैं, जो उन्हें सेलूलोज को पचाने में मदद करते हैं। यह दीमक को उनके प्राकृतिक आवास में रहने और भोजन की तलाश करने में सक्षम बनाता है।

• बरमूडा ट्रायंगल...

बरमूडा ट्रायंगल के बारे में पहली बार लोगों ने 20वीं शताब्दी के मध्य में जाना, जब इस क्षेत्र में कई रहस्यमय घटनाएं घटीं। साल 1918 में USS Cyclops नाम का एक नौसेना जहाज, जिसमें लगभग 309 लोग सवार थे, इस क्षेत्र में अचानक से गायब हो गया। यह घटना पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बनी और इस घटना के बाद से ही लोग बरमूडा ट्रायंगल को जानने लगे। इस जहाज के बाद साल 1945 में दूसरी सबसे बड़ी घटना तब हुई जब, Flight 19 इसी इलाके में गायब हो गया।